राष्ट्रीय सेवा योजना लक्ष्य गीत

उठें समाज के लिए उठें, उठें,
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें, जगें,
स्वयं सजें वसुंधरा संवार दें – 2।

हम उठें उठेगा जग हमारे संग साथियों,
हम बढें तो सब बढ़ेगें अपने आप साथियों,
जमीं पर आसमां को उतारे दें–2।
स्वयं सजें वसुंधरा संवार दें – 2।
उठें समाज के लिए उठें, उठें,
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें, जगें,

उदासियों को दूर कर खुशी को बांटते चलें,
गांव और शहर की दूरियों को पाटते चलें,
ज्ञान को प्रचार दें, प्रसार दें, विज्ञान को प्रचार दें, प्रसार दें।
स्वयं सजें वसुंधरा संवार दें – 2
उठें समाज के लिए उठें, उठें,
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें, जगें,

समर्थ बाल, वृद्ध और नारियां रहें सदा,
हरें भरे वनों की शॉल ओढ़ती रहे धरा,
तरक्कियों की एक नई कतार दें–2।
स्वयं सजें वसुंधरा संवार दें – 2
उठें समाज के लिए उठें, उठें,
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें, जगें,

ये जाति, धर्म, बोलियाँ बने न शूल राह की,
बढ़ाए बेल प्रेम की अखंडता की चाह की,
भावना से ए चमन निखार दें, सद्भावना से ए चमन निखार दें।
स्वयं सजें वसुंधरा संवार दें – 2
उठें समाज के लिए उठें, उठें,
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें, जगें,

उठे समाज के लिए उठें, उठें,
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें, जगें,
स्वयं सजें वसुंधरा संवार दें – 2